IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अभिवृत्ति मापदंड की रचना : एक सैद्धांतिक विचार

Prashant kumar singh[1] and Dr. Amitkumar Mali[2]

[1] Research Scholar, Department of Education, Veer Narmad South Gujarat University, Surat

[2] Assistant Professor, Department of Education, Veer Narmad South Gujarat University, Surat

सारांश

कोतूहल और समस्याओं से भरे हुए इस संसार में मानव के विकास के लिए ईश्वर द्वारा मनुष्य को जो सबसे बड़ा वरदान मिला है वह हैं बुद्धि जिसके चलते मनुष्य इस दुनिया का सबसे शक्तिशाली प्राणी माना जाता है। लेकिन बुद्धि का विकास स्वतः नहीं हो जाता है उसके लिए अधिगम की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में अधिगम बच्चों के लिए क्यों जरूरी है ? की दिशा में सक्रिय और जिज्ञासु हो सके इसके लिए अभिवृत्ति होना आवश्यक है। जटिल विषयों के मायाजाल के बीच बच्चों को रुचिकर विषय का ज्ञान प्रदान करने में आए तो अधिगम के प्रति बच्चों का अभिवृत्ति सकारात्मक बन सकता है और मैं बच्चे भविष्य में कुछ सफलता प्राप्त कर सकते हैं प्रस्तुत लेख में अध्येता ने अभिवृत्ति क्या है इसके उद्देश्यए उपयोगिताए आवृत्ति के लक्षणए अभिवृत्ति के घटकए अभिवृत्ति मापनी को कैसे तैयार करें इस संदर्भ में चर्चा किया है।

चावी रूपी शब्दों: अभिवृत्तिए मापदंडए रचना |

1. प्रस्तावना

जीवन एक वास्तविक एवं रहस्यमय प्रक्रिया हैए ईश्वरीय रचना में मानव जीवन अन्य प्राणियों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ एवं शक्तिशाली है। मानव की यह श्रेष्ठता उसके शारीरिक शक्ति पर निर्भर नहीं करता है क्योंकि शेरए चीताए हाथीए बैलए कुत्ताए भैंस आदि शारीरिक रूप से मनुष्यों से ज्यादा मजबूत है लेकिन मनुष्य की शक्ति इन शक्तिशाली जानवरों की तुलना में बहुत अधिक है जिसके चलते वह इन शक्तिशाली जीवों पर अपना प्रभुत्व रखता है। इससे यह महसूस होता है कि बुद्धि बलवान बनने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है परंतु बुद्धि का विकास स्वतः नहीं हो जाता है। मानव जब समाज में रहकर शिक्षा ग्रहण करता है तब उसकी बुद्धि तीक्ष्ण और कार्यकारी होती है।

विचारों को विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों में तर्कशक्ति इस प्रकार जागृति किया जाए कि वह प्रत्येक कारक और कार्य की प्रतिक्रिया द्वारा सत्यान्वेषण कर सकें तथा वे विषय वस्तु के तनाव एवं उदासीन मानसिकता को ग्रहण न करें बल्कि अधिगम को सहजता और सरलता से अपनी स्वीकृति दे दें। इसलिए विद्यार्थी क्या करेंξ क्यों करेंξ कैसे करेंξ की दिशा में सक्रिय और जिज्ञासु हो सके। इसके लिए अभिवृत्ति होना आवश्यक है क्योंकि बिना तर्क चिंतन और जिज्ञासा से किया गया अधिगम निष्प्रभावीए निरर्थक और कभी-कभी गलत भी हो सकता है। इसलिए सूचनाओं को सत्यता पूर्ण ग्रहण तथ्य पूर्ण चिंतन तथा प्रायोगिक एवं व्यवहारिक क्रियान्वयन करने में अभिवृत्ति का महत्व होता है। अध्येता ने प्रस्तुत लेख में अभिवृत्ति क्या है ξ इसकी उपयोगिताए अभिवृत्ति की माप करने की इसकी रचनाए आदि विषय में अध्ययन किया है।

2. अभिवृत्ति क्या है

अभिवृत्ति मन की एक अवस्था है यह किसी विषय के संबंध में विचारों का एक समुच्चय है जिसमें सकारात्मकए नकारात्मक या तटस्थता का गुण पाया जाता है।

ओलपोर्ट (1937द्ध के अनुसार श्अभिवृत्तिए प्रत्युत्तर देने की वह मानसिक और स्नायुविक तत्परता से संबंधित अवस्था है जो अनुभव द्वारा संगठित होती है तथा जिसके व्यवहार पर निर्देशात्मक तथा गत्यात्मक प्रभाव पड़ता है।"

थर्स्टन (1931द्ध के अनुसार श्किसी विशेष मुद्दा के प्रति व्यक्ति की दृश्य क्रियाओं और प्रेमए पूर्वग्रह और पक्षपातीए मजाक पूर्व स्थापित अभिप्रायए विचारोए भय और दृढ़ मान्यताओं का कुल औसत का मतलब अभिवृत्ति से है।"

पटेल बछराजानी एवं अन्य (2004द्ध के अनुसार "अभिवृत्ति एक व्यक्ति के मन का प्रति चार हैए व्यक्ति विविध रिवाजोंए विचार प्रणालियोंए संस्थाओं या राष्ट्रीय मानव वंशीय समूह के प्रति समंति या असमंति दर्शाता है जिसको मन का प्रतिचार कहा जाता है। मन का प्रतिचार मानसिक और अमूर्त होने से इसका अवलोकन नहीं किया जा सकता है परंतु मानव व्यवहार तथा वाणी पर से उसे नापा जा सकता है। जिसे अभिवृत्ति मापन कसौटी कहते हैं।"

देसाई (2013द्ध के अनुसार "कोई भी वर्ग जैसे कि राष्ट्रीय या मानववंशीय समूह रिवाजए विचार प्रणाली या संस्था के प्रति समंति या असमंति मन के प्रतिचार मतलब अभिवृत्ति से है। मानसिक प्रत्याचार होने से इंद्रियों तक अवलोकन किया जा सकता नहीं परंतु व्यक्ति के वर्तन तथा वाणी पर से उसका अवलोकन किया जा सकता है।"

3. अभिवृत्ति के द्वारा किन उद्देश्यों की पूर्ति होती है

अभिवृत्ति स्वयं में व्यवहार नहीं है परंतु वह एक निश्चित प्रकार से व्यवहार या क्रिया करने की प्रवृत्ति को प्रकट करती है। अभिवृत्ति वह पृष्ठभूमि तैयार करती है जो एक व्यक्ति को यह निर्णय करने में सुविधा प्रदान करती है कि नई परिस्थिति में किस प्रकार से कार्य करना है। उदाहरण के लिए जब हम किसी दूसरे से मिलते हैं तब उसके प्रति हमारी अभिवृत्ति उस व्यक्ति से मिलने पर उससे किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए इसके लिए अप्रत्यक्ष रूप से एक रूपरेखा या ब्लूप्रिंट तैयार करती है ।

4. अभिवृत्ति की उपयोगिता .

किसी भी विषय के प्रति विद्यार्थियो /शिक्षको का अभिवृत्ति मापना । कोई शिक्षण पद्धति के प्रति अभिवृत्ति मापना । कोई समूह के प्रति अभिवृत्ति मापना जैसे कि विद्यार्थियो के प्रति/ कमजोर विद्यार्थियो के प्रति/ होशियार विद्यार्थियो के प्रति आदि के प्रति अभिवृत्ति मापन करना ।

5. अभिवृत्ति के घटक

वर्मा और सिंह (1993) के अनुसार अभिवृत्ति के तीन घटक होते हैं,

1. संज्ञानात्मक (Cognitive)
2. भावात्मक (affective)
3. व्यवहारपरक (bhavirical)

संज्ञानात्मक रू इसमें एक दृष्टिकोण वस्तु के बारे में एक व्यक्ति का विश्वास ज्ञान शामिल

होता है।

उदाहरण : मेरा मानना है कि छिपकली बहुत खतरनाक होती है।

भावात्मक: इसमें वस्तुओं के प्रति भावनाओं का बोध होता है।

व्यवहारपरक: इसमे हमारे रवैये का तरीका प्रभावित करता है कि हम कैसे कार्य करते हैं या व्यवहार करते हैं।

6. अभिवृत्ति के लक्षण

शुक्ल (2010द्ध के अनुसार ष्अभिवृत्ति का विस्तार अमर्यादित होता हैए यह अपना पसंदए नापसंदए खोराकए प्रभुए वस्तुए व्यक्तिए स्थान या अनेक बाबतों के संदर्भ में हो सकता है।" अभिवृत्ति बाहय बाबतों की तरफ या विरोध में होता है। व्यक्ति का व्यवहार अभिवृत्ति के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है। अभिवृत्ति के संदर्भ में व्यक्तिगत अंतर होता है। व्यक्ति का अभिवृत्ति गुप्त या खुला हो सकता है। अभिवृत्ति जन्मजात नहीं होता बल्कि इसका उपार्जन किया जा सकता है। कोई भी वस्तु के प्रति व्यक्ति वस्तु की उपयोगिता के आधार पर तय नहीं होता है। उदाहरण के लिए व्यक्ति की स्वादिष्ट खुराक के प्रति आसक्ति उसके पोषक के कारण पैदा नहीं होता है

7. अभिवृत्ति मापदंड तैयार करने की प्रविधियां

बेस्ट और खान(1995), कौल(2022), गुप्ता (2015द्ध के अनुसार ष्अभिवृत्ति कथनों के एक औपचारिक संग्रहण को ही अभिवृत्ति मापनी कहा जाता है।" प्रयोज्य अभिवृत्ति मापनी के कथनों के संदर्भ के संबंध में अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करते हैं। उनकी प्रतिक्रियाओं को अंक प्रदान करके आंशिक रूप से परिवर्तित कर लिया जाता है एक ही आवृत्ति की मात्रा को इंगित करते हैं परिमापित विधि को दो भागों में बांटा गया है परिमापित कथन विधि में चयनित कथन विभिन्न मात्रा में अभिवृत्ति को परिलिक्षित करते हैं जबकि प्रतिक्रिया विधि में चयनित कथनों पर व्यक्तियों की प्रतिक्रियाओं की सघनता की मात्रा भिन्न-भिन्न होती है इन दोनों ही प्रकार की विधियों का विभिन्न मनोवैज्ञानिको ने विभिन्न प्रकार से विवेचन और उपयोग करके अभिवृत्ति मापनियों की रचना की है। थर्स्टन कि तुलनात्मक निर्णय विधि, थर्स्टन व चेव की आभासी अंतराल विधि तथा सफीर की क्रमबद्ध की प्रमुख विधियां हैं । इन विधियों में कथनों को परिमापित करके उनके

परिमापन मान (scale value) अर्थात उनके द्वारा परिलिक्षित अभिवृत्ति की मात्रा को ज्ञात करने के लिए विभिन्न प्राविधि का प्रयोग किया जाता है। परिमापित प्रतिक्रिया विधि में लिकर्ट की योग निर्धारण विधि सबसे अधिक प्रचलित हैं । अभिवृत्ति मापनी तैयार करने की मुख्य दो विधियां प्रचलित हैं उचार (2012) के अनुसार 1. थर्स्टर्न की पद्धति 2. लिकर्ट की पद्धति

थर्स्टर्न की पद्धति से अभिवृत्ति माफी तैयार करने के लिए विधानो का संकलन करके उसका एक लिस्ट तैयार किया जाता है फिर विधानों का विद्वानों द्वारा समीक्षा कराया जाता है उसके बाद लगभग 50 से100 निष्णांतो को पसंद करके फिर प्रत्येक विधान अभिवृत्ति मापनी के अंतर्गत प्रदर्शित करते कितने प्रमाण में विधान की तरफ तटस्थ या विरोध में है उसके लिए अंकन 1 से 11 बिंदुओं पर किया जाता है उसके बाद विधानों की माप मूल्यों की गणना की जाती है जिसमें 1 से 11 क्रमांको के ऊपर से विधानों का मध्यस्थ मूल्य और पादस्थ मूल्य खोजा जाता है इसी मध्यस्थ मूल्य को विधानो का माप मूल्य कहा जाता है हकारात्मक विधान ओं का माप मूल्य 7 से 11 के बीच, नकारात्मक विधानों का माप मूल्य 1 से 5 के बीच और तटस्थ विचारो का मूल्य 6 जितना होना चाहिए । माप मूल्यों की गणना के आधार पर विधानों को पसंद किया जाता है जिसमें मापनी का अंतिम स्वरूप तैयार होता है जिसमे ऐसे ही विधानो का समावेश होता है जो सबसे सुसंगत ,न्यूनतम संदिग्ध और जो अभिवृत्ति की भिन्न-भिन्न तीव्रताओं को प्रदर्शित करें। इसके बाद विधानो की विश्वसनीयता और वैधता किया जाता है

लिकर्ट पद्धति में विधानो का संकलन करके विधानो का एक ड्राफ्ट तैयार किया जाता है और फिर ड्राफ्ट को विद्वानो द्वारा समीक्षा कराके आकर उसमें विद्वानों द्वारा निर्देशित विधानों को सुधार कर ड्राफ्ट को प्रतिदर्श (Sample) पर संचालित किया जाता है प्रत्येक विधानो के अनुगमित पांच उत्तर लिखे जाते हैं । जिनमें प्रत्येक विधानों में दिए गए पांच उत्तर में से एक उत्तर पसंद करना होता है। अभिवृत्ति की शक्ति की कोटि बताते हुए यह उत्तर दृढ़ता से सहमत, सहमत, कोई मत नहीं, असहमत या दृढ़ता से असहमत के रूप में होते हैं जिसमें हकारात्मक उत्तर के लिए 5,4,3,2,1 अंक प्रत्येक उत्तर के लिए दिए जाते हैं और नकारात्मक विधानो के उत्तर के लिए 1,2,3,4,5, अंक प्रदान किए जाते हैं उसके बाद विधानों का कलम पृथक्करण किया जाता है, कलम पृथक्करण के लिए आंतरिक सत्यता की जांच जिसमें प्रत्येक विधान के लिए

सहसंबंध की गणना किया जाता है और दूसरी विधि में t-मूल्य निकालकर विधानों का कलम प्रथक्करण किया जाता है जिसमें t-मूल्य सार्थक है तो वह विधान योग्य हैं और t-मूल्य सार्थक नहीं है तो विधान योग्य नहीं है फिर उसके बाद विधानों की विश्वसनीयता और वैधता तय किया जाता है, विधानों की विश्वसनीयता और वैधता प्राप्त करने के लिए कलम प्रतिचार सिद्धांत का उपयोग किया जाता हैं ।

8. अभिवृत्ति मापनी तैयार करते समय ध्यान रखने योग्य बाबत

कौल (2022) के अनुसार अभिवृत्ति मापनी तैयार करते समय जो भी विधान पूछे जाएं वह वर्तमान से हो, विधानों की व्याख्या एक से अधिक नहीं होनी चाहिए अप्रासंगिक विवरणों को नहीं लेना चाहिए, ऐसे भी विधानों को नहीं लेना चाहिए जिसका कोई भी समर्थन ना करें या उस विधान का समर्थन करें, सकारात्मक और नकारात्मक प्रकार के विधानों को रखना चाहिए। ऐसे विधानों को पसंद किया जाए जो पूरे व्यापविश्व पर प्रभावी होता है, विधानों के वाक्य सरल, शुद्ध भाषा, स्पष्ट और कोशिश किया जाए कि वाक्य 20 शब्दों से अधिक न हो और विधानो को पढ़ने पर एक से अधिक विचार नहीं आने चाहिए। विधानों में सर्वव्यापी शब्द जैसे सब, सर्वदा, कोई नहीं, कभी नहीं, मैं, बिल्कुल, तुम केवल जैसे संदिग्धता प्रदर्शित करने वाले विधानों को तथा दोहरे नकारात्मक वाक्य वाले विधानों को नहीं लेना चाहिए।

9. समापन :

प्रस्तुत लेख में अध्येता ने अभिवृत्ति के बारे में चर्चा किया जिसमे यह पता चला कि विद्यार्थी सक्रीय एवं जिज्ञासु करने के अभिवृति बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । किसी भी व्यक्ति के अभिवृत्ति का मापन करने के लिए थस्टर्न, लिकर्ट ने प्रविधियों के बारे में बताया हैं । उपरोक्त अध्ययन से यह पता चला कि किसी भी विषय वस्तु को सत्यतापूर्ण ग्रहण ,तथ्यपूर्ण चिंतन, तथा प्रायोगिक एवं व्यवहारिक बनाने के लिए अभिवृत्ति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं ।

सन्दर्भ सूची

- Allen L.(1957) .Technique of Attitude Scale Construction. New York : Appleton century croftd,Inc P.20
- Best W.and Khan J.(1995).Research in education USA: Peretice, hall INCTTLS P.245.
- Gupta S.P.(2015).Research Introductory. Allhabad:Sharada Pustal Bhavan P.199
- Punch K. and Oancea A.(2014). Introduction to Research methods in education New Delhi: SAGE Publication P.291
- Thurston(1931). Scale of the measurement of attitude towards censorship. Chicago: University Chicago Press.
- Verma M. and Tejinder Singh(1993). Indian Pediatrics from: https://www.researchgate.net/publication/15159116
- ओलपोर्ट जे,डब्लू(1937). पर्सनेलिटी साइकोलोजी, न्यूयार्क : इंटर प्रिटेशन. हाल्ट एंड कंपनी.
- उचाट डी.ये.(2012).शिक्षण और सामाजिक विज्ञान में संशोधन का पद्ध्तिशास्त्र (द्वितीय आवृत्ति). अहमदाबाद: पारस प्रकाशन पृ. नं. 159
- कौल एल.(2022). शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली. नोएडा: विकास पब्लिशिंग हॉउस पृ. नं. 174.
- देसाई के जी.(2013). मनोवैज्ञानिक मापन. अहमदाबाद :यूनिवर्सिटी ग्रन्थ निर्माण बोर्ड पृ. नं. 450.
- पटेल एम.,वछराजा बी.एवं अन्य (2004).शैक्षणिक संशोधन ,मापन, मूल्यांकन और आकंणाशास्त्र. अहमदाबाद: बी.एस. शाह प्रकाशन पृ. नं. 265
- न्युकाम्ब एम.(1973). एक्सपेरिमेंटल सोसियल सायकोलोजी. कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी : कैलोफोर्निया
- शुक्ल एस.एस.(2014). शैक्षणिक मनोविज्ञान. अहमदाबाद :अग्रवाल प्रकाशन. पृ. नं. 386